1

मातृकला : अर्थ और महत्व
[MEANING AND IMPORTANCE OF MOTHER CRAFT]

समाज में माता का स्थान सर्वोपरि एवं सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। नारी को जो सम्मान प्राप्त हुआ है उसका प्रमुख कारण उसका मातृत्व ही है। वास्तव में माता प्रकृति की वह सर्वश्रेष्ठ कृति है जिसके द्वारा सृष्टि की निरन्तरता बननी सम्भव हो सकी है। माता केवल जननी ही नहीं है वरन् वह बच्चे की पालनकर्ता भी है। बच्चे का पालन-पोषण भी जिस कष्ट व तपस्या से वह करती है इसीलिए मातृऋण के विषय में कहा गया है कि माँ की जितनी भी सेवा की जाए लेकिन मातृऋण से व्यक्ति कभी भी उऋण नहीं हो सकता है।

जब तक नारी माँ नहीं बनती उसका जीवन अपूर्ण व अधूरा रहता है। वास्तव में बच्चे के जन्म के बाद ही नारी जीवन पूर्णता को प्राप्त करता है। सृष्टि का क्रम भी इस जन्म से ही चलता रहता है और जन्म देने का कार्य ईश्वर द्वारा नारी को ही सौंपा गया है। मातृत्व शब्द में सम्पूर्ण सृष्टि समाई हुई है। मातृत्व द्वारा नारी को गौरव व सम्मान प्राप्त होता है और सृष्टि का संचालन भी मातृत्व द्वारा सम्भव है।

'मातृकला' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है 'मातृ' एवं 'कला'। मातृ का तात्पर्य है 'जननी' अर्थात् बच्चे को जन्म देने वाली स्त्री। माता का प्रमुख धर्म बच्चे को जन्म देना और उसकी देखभाल एवं पालन-पोषण करना है और माता में प्रकृति ने स्वाभाविक गुण जैसे—नम्रता, स्नेह, त्याग, सहनशीलता, क्षमा, दया, सहानुभूति आदि भर दिये हैं जिससे वह शिशु का पालन-पोषण करती है, उसकी देखभाल करती है। उसको प्रसन्न देखने के लिए कोई भी कष्ट सहर्ष उठाती है। उसकी एक मुस्कान पर अपना समस्त सुख-चैन न्यौछावर कर देती है। शिशु को धारण करना और पालन-पोषण करना दोनों ही कठिन कार्य हैं अतः इन नैसर्गिक गुणों द्वारा ही मातृत्व का उत्तरदायित्व माता वहन करती है। इन्हीं गुणों को मातृत्व के गुण कहते हैं। मातृत्व अर्थात् मातृ + तत्व = माता योग्य तत्व। हमारे शास्त्रों में भी गुरु एवं पिता दोनों की अपेक्षा माता का स्थान उच्च बताया गया है। इस प्रकार जो नारी शिशु को धारण करती है उसका पालन-पोषण करती है माँ कहलाती है।

कला का तात्पर्य उस व्यवहार प्रदर्शन से है जो सुन्दर और उचित वस्तुओं की प्राप्ति का मार्ग प्रकाशित करें। **एच. एस. चटर्जी** के अनुसार, ''कला का दृष्टिकोण व्यवहारिक उद्देश्य होता है। कलाकार कुछ वस्तुओं को अच्छा और उपयोगी मानता है और कुछ को खराब और अनुपयोगी। कला का उद्देश्य यह निश्चित करना है कि एक को कैसे प्राप्त किया जाए और दूसरे को कैसे त्यागा जाए। इसके लिए वह कुछ समय निर्धारित करता है।''

अतः मातृकला का तात्पर्य उस कला से है जिसके अन्तर्गत गर्भस्थ शिशु का विकास, गर्भावस्था के कष्ट और समस्याओं का सामना करने, शिशु को जन्म देने, शिशु एवं स्वयं की देखभाल करने तथा शिशु की उचित अभिवृद्धि एवं विकास हेतु उसका पालन-पोषण करने में पुत्र कामना एवं वात्सल्य की भावना से प्रेरित होकर माता जिन पद्धतियों एवं नियमों को अपनाती है अथवा जिन्हें अपनाना चाहिए, इन्हीं का अध्ययन किया जाता है।

Scanned with CamScanner

चैम्बर्स डिक्शनरी के अन्तर्गत मातृकला का अर्थ है "शिशु पालन हेतु आवश्यक ज्ञान एवं दक्षता (Knowledge and skills required for care of child) से है। शिशु पालन से तात्पर्य है—बालक को छोटे से बड़ा करना, निर्भर से आत्मनिर्भर बनाना, असहाय से स्वावलम्बी बनाना।"

मानव शिशु जन्म के समय और उसके भी बहुत समय बाद तक असहाय होता है उसकी यदि उचित देखभाल न की जाए तो उसका जीवन भी सम्भव नहीं हो सकता है। अतः ईश्वर ने स्वाभाविक रूप से नारी में ममता, प्रेम, त्याग आदि भावनाएँ प्रदत्त की हैं जिससे गर्भ में बच्चे के आते ही और जन्म के पश्चात् वह उसकी देखभाल करती है।

शिशु पालन से तात्पर्य है गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक बच्चे की देखभाल करना जिसमें बालक के व्यक्तित्व का आधारभूत विकास होता है। इस देखभाल एवं पालन-पोषण में मुख्य रूप से माता का ही योगदान रहता है।

इस प्रकार मातृकला एवं शिशु पालन से तात्पर्य जीवशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक ज्ञान एवं सिद्धान्तों पर आधारित स्त्री के स्वस्थ एवं सफल माँ बनने की उस कला या 'द्विमुखी प्रक्रिया से है' जिसके द्वारा वह माँ के लिए आवश्यक उपयुक्तताओं को अर्जित कर बच्चे की गर्भावस्था से लेकर पूर्व-किशोरावस्था तक विकासात्मक दृष्टिकोण रखकर उसकी उचित देखभाल व पालन-पोषण के लिए उपयुक्त विधियाँ, सावधानियाँ एवं नियमों को अपनाते हुए उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं; यथा—शारीरिक, क्रियात्मक, संवेगात्मक, मानसिक, चारित्रिक आदि के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है और इस प्रकार के योगदान द्वारा स्वयं अपने, अपने बच्चे, समाज तथा देश के प्रति नैतिक कर्त्तव्यों का पालन करती है। मातृकला वस्तुतः शिशु पालन व रक्षा सम्बन्धी ज्ञान एवं दक्षताओं का विज्ञान है। आज का बच्चा देश का भावी कर्णधार है। देश का उत्थान-पतन सभी कुछ उसी पर निर्भर करता है। यदि बालक स्वस्थ है, शक्तिशाली है, उत्साही है, सदाचारी है, तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है देश की उन्नति होगी। अतः यह आवश्यक है कि आरम्भ से ही बच्चे का सही ढंग से पालन-पोषण किया जाए। यही बच्चा उस समाज तथा देश का नागरिक बनकर उसे उन्नत करता है। मातृत्व का तात्पर्य शिशु को जन्म देना मात्र ही नहीं है वरन् स्वस्थ शिशु को जन्म देकर देश व समाज को स्वस्थ नागरिक प्रदान करना है और उचित पालन-पोषण करना है जिससे शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक स्वास्थ्य भी प्रदान किया जा सके जो कि देश के सुयोग्य नागरिक बनने में सहायक हो।

अतः बच्चे का पालन-पोषण के वैज्ञानिक व कलात्मक ज्ञान द्वारा ही माता सर्वगुण सम्पन्न बच्चे को विकसित कर सकती है। अध्ययनों द्वारा यह ज्ञात होता है कि बच्चे के विकास में माता का अभूतपूर्व योगदान होता है। यदि माँ को इस सन्दर्भ में प्रशिक्षण दिया जाए तो उसके द्वारा बच्चे के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास सम्भव है।

Scanned with CamScanner